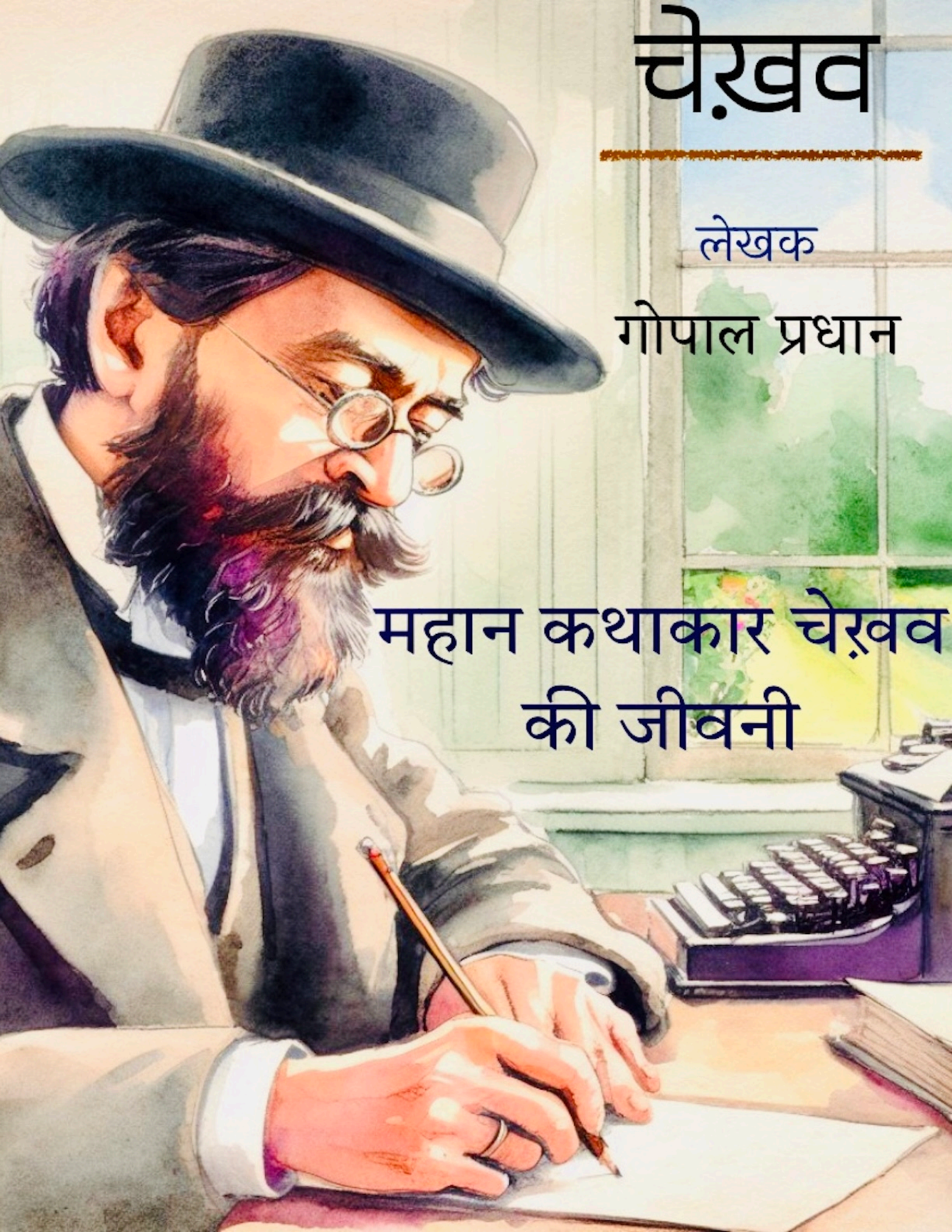

चेख़व

लेखक

गोपाल प्रधान

महान कथाकार चेख़व की जीवनी

चेख़व

महान कथाकार चेख़व की जीवनी

गोपाल प्रधान

अनुक्रम

बचपन के दिन	10
अलविदा तागानरोग	29
लेखक का जन्म	48
प्रसिद्धि की ओर	76
नए दोस्त, नए मुक़ाम	109
अलविदा चेखोंते	143
नाटकों की ओर वापसी	182
बीमारी का नया उभार	223
‘सीगल’ : एक और कोशिश	245
डॉक्टरों की क़ैद में	264
रंगमंच का किला फतह	288
दिल तो है दिल!	306
भौंरा का आया बैशाख	330
सहरा में घर की याद	353

मौत की राह में दिए की लौ 374

डासत ही गई बीति निशा सब 394

परिशिष्ट : 1

मैक्सिम गोर्की की नज़रों में चेख़व 411

परिशिष्ट : 2

ओल्गा निपर के संस्मरणों में चेख़व 449

भूमिका

हिंदी-जगत पर रूसी-साहित्य का प्रभाव 1917 की बोल्शेविक क्रांति से ही पड़ना शुरू हो गया था. प्रेमचंद ने बांग्ला उपन्यासों की जगह रूसी और फ़्रांसीसी साहित्य के अनुवाद पर ज़ोर दिया था. उनका अंतिम सार्वजनिक भाषण मैक्सिम गोर्की की मृत्यु पर आयोजित शोकसभा में पढ़ा गया था. चेख़व से उन्होंने कहानी के कलात्मक कौशल तो सीखे ही, 'आदर्शोन्मुख यथार्थवाद' की उनकी अवधारणा भी आश्चर्यजनक रूप से चेख़व के विचारों से मिलती-जुलती है. प्रगतिशील आंदोलन के विकास के साथ रूसी साहित्य और भी चर्चा में आता गया. बाद में प्रगति प्रकाशन और रादुगा प्रकाशन के ज़रिए रूस ने व्यवस्थित रूप से रूसी साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए किताबें छपवाईं. तब हरेक शहर में पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस की दुकानें और हरेक क़स्बे में प्रगति प्रकाशन की सचल पुस्तक-प्रदर्शनी आम बात थी. हिंदी पढ़ने वालों की पीढ़ी-दर-पीढ़ी इन सस्ती किताबों को पढ़कर उस साहित्य से परिचित होती रही, जो एक ज़माने का सर्वोत्तम साहित्य था.

दुर्भाग्य से प्रेमचंद के बाद रूसी साहित्य, विशेषकर चेख़व हिंदी कथा-साहित्य में हुए नकारात्मक विकास से प्रभावित हुए. स्वतंत्रता के बाद हिंदी में मध्यवर्ग की

चिंताएं मध्यवर्गीय दृष्टिकोण से ही सुनाई पड़ने लगीं. कथाकारों की एक ऐसी पीढ़ी का जन्म हुआ, जिसने मध्यवर्गीय कुंठाओं का सस्ते सुख हेतु विकृत वर्णन शुरू किया. इस रुग्ण मानसिकता का शिकार चेख़व भी हुए और उनकी छवि गंभीर साहित्यकार की जगह छिछोरे रसिया की बना दी गई. चेख़व के जीवन को अपनी रुग्ण मानसिकता का औचित्य साबित करने के लिए इस तरह पेश किया गया, जिससे चटखारा मिल सके. कुछ ऐसे संस्मरण भी छापे गए, जिनकी विश्वसनीयता साहित्य पर गहराई से विचार करने वालों के लिए हमेशा संदिग्ध रही. चेख़व के जीवन में अनथक संघर्ष और उदासी की अंतर्धारा निरंतर प्रवाहमान रही है. मेरा प्रयास उनके रचनात्मक संघर्ष को उद्घाटित करना रहा है.

पुश्किन के साथ रूसी-साहित्य ने, जो अंगड़ाई ली, वह तुर्गनेव और गोगोल से होते हुए तोलस्तोय के साथ विश्व साहित्य पर छा गया. कहते हैं कि उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध पर अगर बालजाक का दबदबा था तो उत्तरार्ध पर तोलस्तोय ने राज किया. इसमें कथा-साहित्य का योगदान महत्त्वपूर्ण है. इसी क्रम में तोलस्तोय के ठीक बाद और गोर्की के ठीक पहले अंतोन चेख़व आते हैं. चेख़व की कहानियों और नाटकों से हिंदी पाठकों का परिचय तो है, लेकिन उनका कोई जीवनवृत्त हिंदी में उपलब्ध नहीं है. बहुत पहले राजेंद्र यादव ने 'एंतोन पावलोविच चेख़व : एक इंटरव्यू' शीर्षक से एक पुस्तिका लिखी थी, जिसमें चेख़व के साथ एक काल्पनिक साक्षात्कार के ज़रिए उनके

जीवन के बारे में रोचक ढंग से चर्चा की गई थी. बाद में उन्होंने ही 'हंस' में लीडिया एविलोवा के संस्मरण छापे, जो चेख़व के जीवन की जानकारी एक ख़ास रंग में पेश करते हैं.

चेख़व का समय रूसी शासकों के विरुद्ध षड्यंत्रों या छात्रों के प्रतिरोधों का समय था. ये आंदोलन जनविक्षोभ की दिशाहीन अभिव्यक्ति थे. समूचा समाज हालात में बदलाव के लिए छटपटा रहा था, पर कोई दिशा नहीं रही थी. ऐसे ही समय में 'हास्य पत्रिकाओं' की बाढ़ आ गई. इनमें हास्य के साथ व्यंग्य भी होता था. इस व्यंग्य के कारण ही ये पत्रिकाएं लोकप्रिय भी बहुत हुईं. चेख़व इन्हीं पत्रिकाओं की उपज थे. सामान्य हास्य से पृथक उनका करुण व्यंग्य ही उन्हें महान कलाकार बना देता है.

पुस्तक में शिखर पर पहुंचे चेख़व के मुकाबले निर्माणाधीन चेख़व पर अनजाने ही अधिक ध्यान दिया गया है. ऐसा संभवतः मेरी व्यक्तिगत रुचि के कारण हुआ है. वैसे भी साहित्य में सिद्धि के मुक़ाबले साधना पर अधिक ज़ोर देने की सलाह अनुभवी लोग देते हैं. कारण संभवतः यह है कि निर्माणाधीन कलाकार के रचनात्मक संघर्ष के साथ सामान्य मनुष्य भी अपने संघर्ष को जोड़ लेता है और कथानायक के सहारे अपने जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों से ऊपर उठने की प्रेरणा पाता है. उसे लगता है कि चोटी पर खड़े इस मनुष्य में कुछ भी विशेष नहीं था. वह भी साधारण मनुष्य ही था, जो अपनी प्रतिक्रियाओं को आकार देने के क्रम में धीरे-धीरे रचनात्मक सिद्धि हासिल कर

सका. एक बार मक़बूल हो जाने की कठिन चढ़ाई पार कर लेने के बाद की उतराई में कष्ट भले अधिक हो, पर गति तीव्र हो जाती है.

रूसी कथा-साहित्य की परंपरा के हिसाब से चेख़व कई मामलों में बहुत ही विशिष्ट हैं. उनके पहले के कथाकार कुलीन या रईस ज़मींदार घरानों से आए थे, चेख़व एक छोटे क़स्बे के बदहाल किराना व्यापारी की संतान थे. कथा-साहित्य की दुनिया में उनका प्रवेश तथाकथित साहित्यिक या शिष्ट पत्रिकाओं के ज़रिए नहीं, बल्कि हास्य-व्यंग्य की लोकप्रिय पत्रिकाओं के ज़रिए हुआ था. उन्होंने कोई उपन्यास नहीं लिखा, जो किसी भी कथाकार की कीर्ति का मज़बूत आधार होता है, बल्कि सिर्फ़ छोटी कहानियों के बल पर रूसी साहित्य की महान परंपरा में अपने लिए जगह बनाई. इन परिस्थितियों के बावजूद उनका लिखा साहित्य न सिर्फ़ क्लासिकीय रूसी परंपरा का अंग बना, बल्कि विश्व के अग्रणी कथाकारों में भी उन्हें सम्मानजनक ओहदा प्राप्त है.

तोलस्तोय के ईसाई मानवतावाद और गोर्की की क्रांतिकारी रूमानियत के बीच बढ़ा चेख़व का साहित्य 1905 की पहली रूसी क्रांति के ठीक पहले के उमस भरे दिनों का साहित्य है. अपनी कहानियों और नाटकों के ज़रिए उन्होंने ठेठ रूसी मनुष्य को, उसकी समूची बदहाली और अच्छाइयों के साथ चित्रित किया. उम्र ने उन्हें कुल चवालिस बरस दिए, जिनमें अधिकांश तपेदिक की भेंट चढ़ गए. उसी जीवन को हिंदी में प्रस्तुत करने की यह छोटी सी कोशिश है. आशा है, पसंद आएगी. परिशिष्ट के